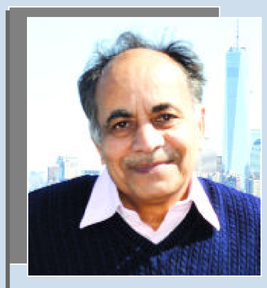

लक्ष्मेन्द्र चोपड़ा

एच–1, यूनिक टावर्स,
एनआरआई कॉलोनी के पास,
जगतपुरा, जयपुर–302017

इस चमकदार समय में : दो कविताएं

विश्व ग्राम

न तुरही, न मांदर की थाप,
न कलम, न कूंची की छाप।
न चिट्ठी न तार
फ़िर भी तैर रहे हैं
हवाओं में संदेशे करोड़ों हजार।
पाठशाला की छत
बनी पीपल की छांव।
पीपा पुल टूट चुका
वर्षों पहले की बाढ़ में,
इकलौती डोंगी भी
भीषण सूखे में हो गई नीलाम।
गिनती, पहाड़े, अक्षर
सीखने की चाह में,
पहुंच रहे हैं बच्चे
रस्सियां पकड़-पकड़
सरसतिया नदी की राह में।
गुरुजी के गांव की
पाठशाला के द्वार,
पीपल, इमली, नीम की
ऊंची फुनगियों के पार;
विशाल बर्बरीक सा,
सीना ताने खड़ा हो रहा है,
सल्फी वृक्ष के सिर पर
मोबाइल टावर का अवतार।।
गुरुजी बताते हैं,
ये हैं आसमानी तरंगों का विस्तार।
देख रहे हैं
पूरे गांव के नैना,
प्रचलित हो रहा है,
नया लोकगीत गांव में
'इस्कूल आसो, आसो टावर हवा पकड़े बैना।'
गांव देख रहा है
चील गाड़ी के बाद,
कुछ और नया
कुछ और विशाल;
आ गया है
उनके गांव में
चुपचाप,
दबे पांवों,
बन गया है जीवन का
नया खटराग!
गुरुजी कहते हैं
ये है चमकदार समय की पहचान,
कहते हैं इसको मोबाइल टावर,
गांव रहेगा यहीं चुपचाप बैठा;
बस संदेश, दृश्य उड़ेंगे, तैरेंगे,
गांव के आसमान में करोड़ों हजार।

गुरुजी अभी ज्यादा नहीं जानते,
गूगल खोज को भी नहीं पहचानते।
उन्हें नहीं पता;
टूटे पीपा पुल का
रस्सी गांव
नेट के नक्शे पर
बन गया है विश्व ग्राम।।

समय विषम